राजस्थान विधान सभा की कार्यवाही का वृत्तान्त

अंक ८] तृतीय विधान सभा के अष्टम सत्र, १९६५ का प्रथम दिवस [संख्या १

सोमवार, दिनांक २० सितम्बर, १९६५

विधान सभा की बैठक म. प. ३.३० बजे विधान सभा भवन, जयपुर में प्रारंभ हुई ।

(श्री रामनिवास मिर्धा, अध्यक्ष, पदासीन)

निर्वाचित सदस्यों द्वारा शपथ ग्रहण

श्री अध्यक्ष : मैं सदन को सूचित करता हूं कि विधान सभा के अन्तर्सत्र काल में नोहर क्षेत्र से उप-चुनाव में निर्वाचित सदस्य, श्री दयाराम, ने भारत के संविधान की तृतीय अनुसूची में दिये गये प्रपत्र ७ (ख) के अनुसार दिनांक १४ जुलाई, १९६५ को मेरे समक्ष निर्धारित शपथ ले ली है ।

श्री दयाराम अब सचिव के निकट आकर सदस्यों की नामावली में हस्ताक्षर करेंगे ।

[श्री दयाराम (नोहर), सदस्य, विधान सभा ने सदस्यों की नामावली में हस्ताक्षर किये]

श्री दामोदरलाल व्यास । शपथ अथवा प्रतिज्ञान ।

[श्री दामोदरलाल व्यास (राजाखेड़ा), सदस्य, विधान सभा ने शपथ ग्रहण की एवं उन्होंने सदस्यों की नामावली पर हस्ताक्षर किये] ।

(३.३५ म. प.)

स्थगन-प्रस्तावों विषयक

कुछ माननीय सदस्यों ने स्थगन-प्रस्तावों की सूचना दी है जिनका संबंध युद्ध की स्थिति से, भरतपुर में बाढ़ से, खाद्यान्न इत्यादि से है । ऐसी व्यवस्था की जा रही है कि इन विषयों पर जुदा एक बहस की जाय और सब माननीय सदस्यों और दलों के नेता हैं उनसे विचार-विमर्श करने के पश्चात् उसके लिए तिथि निश्चित की जाय । इसलिए मैं उचित नहीं समझता कि इन प्रस्तावों को स्वीकार किया जाय और सदन की जो निर्धारित कार्यवाही है उसको स्थगित किया जाय ।

(३.३७ म. प.)

श्री बलवन्तराय मेहता एवं उनकी धर्मपत्नी इत्यादि की वायुयान दुर्घटना के कारण हुए दु:खद अवसान पर श्रद्धांजलियां

श्री मोहनलाल सुखाडिया (मुख्य मंत्री): माननीय अध्यक्ष महोदय, कल रात को अचानक हम सबको यह समाचार मिला कि गुजरात के मुख्य मंत्री, श्री बलवन्तराय मेहता, की

Page No 2

(श्री मोहनलाल सुखाड़िया)
हवाई जहाज की दुर्घटना के अन्दर अचानक मृत्यु हो गई। श्री बलवन्तराय मेहता अहमदाबाद से द्वारका और जामनगर की तरफ, जहां कुछ दिनों पहले पाकिस्तान के द्वारा बमबारी होने के कारण नुकसान हुआ था, वह देखने के लिए, वहां के लोगों से मिलने के लिए जा रहे थे। कुछ क्षेत्रों से अब तक यह जानकारी सामने आई है कि श्री बलवन्तरायजी का हवाई जहाज जब उस तरफ जा रहा था उस मौके पर दो हवाई जहाजों ने उसका पीछा किया और पीछा करने के बाद उस हवाई जहाज पर आक्रमण किये जाने के कारण वह हवाई जहाज क्षतिग्रस्त हुआ। आज की परिस्थिति में प्राइमाफेसी ऐसा मालूम होता है कि और कोई दूसरे या अनआइडेंटीफाइड हवाई जहाज वे नहीं हो सकते और यह घृणित कार्य पाकिस्तान के द्वारा ही किया गया हो—ऐसा मालूम होता है। इस संबंध में विस्तृत जानकारी भारत सरकार के द्वारा की जा रही है और उसके पूरे हालात सब के सामने शीघ्र ही आ जायेंगे। लेकिन आज यह सत्य है कि श्री बलवन्तरायजी मेहता, जिन्होंने भारतवर्ष की और खास तौर से जो पुरानी देशी रियासतें थीं उनकी इतनी बड़ी लम्बी सेवा की, की अब भी भारतवर्ष की इस महत्वपूर्ण घड़ी पर सेवा करते हुए एक सक्रिय व्यक्ति के तौर पर वीर गति को प्राप्त होने का अवसर प्राप्त हुआ। उन्होंने अपना कर्तव्य, जो कुछ वे कर सके, करने की बात की। आज हम सबके दिमाग में यह गम्भीर घटना आंखों के सामने घूमती है कि किस तरह नृशंसतापूर्ण तरीकों को आज पाकिस्तान अपनाता हुआ चला जा रहा है। जो समाचार थे उनमें गांव वालों ने बताया है, वे हवाई जहाज उन पर आक्रमण करने के बाद पाकिस्तान की तरफ उड़ते देखे गये।

माननीय अध्यक्ष महोदय, श्री बलवन्तरायजी मेहता आल इंडिया पीपुल्स कान्फ्रेन्स के एक बहुत ही अग्रगी कार्यकर्त्ताओं के अन्दर थे। हममें से कई व्यक्तियों का उनके साथ एक लम्बे समय से सम्पर्क रहा। करीब इक्कीस वर्ष से तो मेरा व्यक्तिगत तौर पर परिचय रहा। उन्होंने देशी रियासतों की स्वतन्त्रता के संघर्ष में बहुत ही महत्वपूर्ण योगदान दिया था। वे महात्मा गांधी के अनुयायी थे। इसके अलावा देश में जो जनतान्त्रिक प्रणाली पंचायत राज्य की शुरूआत की गई है उसका ढांचा बनाने के लिये वे सबसे ज्यादा जिम्मेदार थे। उन्होंने डेमोक्रेटिक डिसेण्ट्रलाइजेशन के बारे में जो पुस्तिका और जो योजना देश के सामने रखी उस पर आज देश के अलग अलग हिस्सों में मामूली रद्दोबदल के साथ अमल किया जा रहा है। श्री बलवन्तरायजी मेहता कांग्रेस के जनरल सेक्रेटरी रहे, भावनगर के मुख्य मंत्री रहे व पार्लियामेंट की एस्टीमेट्स कमेटी के चेयरमैन रहे। अलग अलग पदों पर रह कर एक शान्त चित्त से, बिना किसी प्रकार के दिखावे के, उनको जो भी कर्तव्य दिया गया, उस कर्तव्य को वे जीवन भर तक निभाते रहे और आखिर में भी उन्होंने अपना जीवनदान देकर भी अपना कर्तव्य निभाया।

मैं उनके प्रति और जो उनके पीछे उनके परिवार के सदस्य हैं उनके प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और मुझे आशा

Page No 3

(श्री मोहनलाल सुखाड़िया)
है कि सदन के सभी माननीय सदस्य इस बात से सहमत होंगे और जो प्रस्ताव मैं प्रस्तुत कर रहा हूं उस प्रस्ताव को एक ही राय से हम यहां पर पारित करेंगे।

प्रस्ताव निम्न प्रकार से है :—

"शोक–प्रस्ताव

यह सदन गुजरात के मुख्य मंत्री, श्री बलवन्तराय मेहता की १९ सितम्बर, १९६५ को हवाई जहाज के नष्ट हो जाने से हुई अकाल और दुःखद मृत्यु पर गहन शोक प्रकट करता है।

इस महान् देशभक्त की अप्रत्याशित और यकायक मृत्यु से देश के सार्वजनिक जीवन में ऐसा स्थान रिक्त हुआ है जिसका इस घड़ी भरा जाना अत्यन्त कठिन है।

हम राजस्थानवासी उनके विशेष रूप से आभारी हैं कि उन्होंने स्वतंत्रता के आन्दोलन में तथा देशी राज्यों की जनता के आजादी के संघर्ष में बड़ी लगन से सेवा की थी। वे इन आन्दोलनों में प्रारंभ से ही भाग लेते रहे थे। अभी हाल में पंचायती राज्य के निर्माण में उनका योगदान भारत की जनतन्त्रीय इतिहास की चिरस्थायी यादगार बना रहेगा।

एक पड़ौसी राज्य के मुख्य मंत्री होने के नाते वे सदैव हमारी समस्याओं को सहानुभूति-पूर्वक समझते रहे थे और उन्होंने राजस्थान की जनता के साथ सदैव मैत्रीपूर्ण संबंध बनाये रखा।

यह सदन गुजरात की सरकार और जनता तथा श्री मेहता के शोक संतप्त परिवार के प्रति हार्दिक संवेदना प्रेषित करता है।

यह सदन इस दुःखान्त दुर्घटना में अन्य मरने वालों के शोक संतप्त परिवारों के प्रति भी सहानुभूति प्रेषित करता है।

महारावल श्री लक्ष्मणसिंह (आसपुर) : अध्यक्ष महोदय, अपने पड़ौसी राज्य के मुख्य मंत्री, श्री बलवन्तराय मेहता की हवाई जहाज में दुर्घटनावश एकाएक मृत्यु की सनसनीखेज खबर आज मैंने दोपहर को सुनी। माननीय मुख्य मंत्री के बयान के अनुसार यह स्पष्ट हो जाता है कि श्री मेहता आज की संकटकालीन स्थिति के अन्दर अपना पुनीत कर्त्तव्य पालन करते हुए इस आकस्मिक घटना के शिकार बने। हमें इसके लिये दुःख है, किन्तु जिन कारणों और जिस संबन्ध में उनकी मृत्यु हुई है, मैं यह कहूंगा कि वे धन्य हैं। श्री बलवन्तराय मेहता को मैं सामान्य रूप से आज से २५ वर्ष पूर्व से जानता हूं। वे एक उदार और योग्य व्यक्ति थे। वे उस समय हमारे, विद्रोही या विरोधी जो कुछ भी कहा जावे थे, लेकिन वे एक उदारचित्त व्यक्ति थे। वे कुछ ही दिनों गुजरात के चीफ मिनिस्टर रहे। उनके इस आकस्मिक निधन की खबर से मुझे दुःख है। मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि श्री मेहता और श्रीमती मेहता व इस हवाई जहाज में जो अन्य व्यक्ति थे, जिनकी भी मृत्यु हुई, ईश्वर उनकी आत्मा को चिर शांति दे। मैं मुख्य मंत्री महोदय के प्रस्ताव का इन्हीं शब्दों के साथ समर्थन करता हूं।

श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल (जौहरी बाजार, जयपुर): अध्यक्ष महोदय गुजरात के भूतपूर्व मुख्य मंत्री श्री बलवन्तराय मेहता के निधन पर जो प्रस्ताव मुख्य मंत्री ने प्रस्तुत किया है मैं उसका समर्थन करता हूं।

(श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल)

अध्यक्ष महोदय, वैसे तो विधि-विधान के अनुसार जो दुनिया में आया है उसको जाना है और यही सोच कर इस प्रकार के निधनों पर हमें संतोष करना पड़ता है. परन्तु श्री बलवन्तराय मेहता की मृत्यु जिन परिस्थितियों में हुई वे परिस्थितियां अपने आप में विशेष हैं और जैसा हम सबको विदित है कि जिस विमान में वे जा रहे थे, उन इलाकों का दौरा कर रहे थे जिन पर पाकिस्तान ने कुछ दिनों पहले बमबारी की थी। तो एक प्रकार से श्री मेहता, एक प्रकार से सीमा पर किये गये हमले की देखभाल करने के संबन्ध में हुई यात्रा में उनकी मृत्यु हुई और उनकी मृत्यु एक प्रकार से उन्हीं जवानों की तरह से है जो आज सीमा पर हमारे देश की रक्षा कर रहे हैं। श्री बलवन्तराय मेहता ने अपने जीवन की परवाह नहीं करते हुए, बमबारी करते हुए इलाकों में जाने का निश्चय लिया और हमारे राज्य और देश की जो एक परिपाटी है कि जिनके हाथ शासन है वे देश की रक्षा के लिये प्राणों की परवाह नहीं करें, वे अपने देश और राज्य की रक्षा के लिये परवाह नहीं करें और सीमा की रक्षा के लिये जावें, गये।

जहां तक श्री बलवन्तराय मेहता को जानने का प्रश्न है, मैंने उन्हें देखा नहीं, लेकिन उनकी रिपोर्ट पढ़ी है। मैं कह सकता हूं कि जब तक लोकतन्त्र कायम रहेगा, लोकतन्त्र का वृक्ष लगा है वह वृक्ष फलता-फूलता रहेगा तब तक उनका नाम हिन्दुस्तान के इतिहास में अमर रहेगा। इन्हीं शब्दों के साथ मैं अपने और अपने दल की तरफ से, जो प्रस्ताव मुख्य मंत्री जी ने रखा है उसका समर्थन करता हूं।

श्री मुरलीधर व्यास (बीकानेर) : अध्यक्ष महोदय, जिन परिस्थितियों में श्री बलवन्तराय मेहता की मृत्यु हुई है, वह इस प्रकार की है कि जिससे सारे देश का ध्यान उसकी तरफ आकर्षित हो गया है। यह निधन, जैसा कि अभी मुख्य मंत्रीजी ने कहा है कि वे क्षेत्र का दौरा करने के लिये जा रहे थे और दो हवाई जहाजों ने उनका पीछा किया और उनके द्वारा उनके जहाज को क्षतिग्रस्त किया गया; जहां तक उनके निधन का प्रश्न है, वह इस प्रकार की खबर है जो सारे देश को व्याकुल करती है। आज हम यह देखते हैं कि देश में किस प्रकार के वातावरण की आवश्यकता है कि हर व्यक्ति अपने आपको संकट में डाल कर देश की सुरक्षा के लिये आगे बढ़े। वे क्षतिग्रस्त इलाकों में, जहां की स्थिति बहुत खराब थी, देखने के लिये गये, जहां ऐसी स्थिति थी जो अपने आपको जोखम में डालना था। और मैं समझता हूं कि उन्होंने अपनी जान को जोखम में डाला। जब कभी देश पर इस प्रकार की परिस्थितियां आती है उस समय ऐसे ही लोग आगे आकर अपने प्राणों को न्योछावर करते हैं। मैं, मुख्य मंत्रीजी ने जो प्रस्ताव रखा है उसका समर्थन करता हूं। मैं कहूंगा कि उन्होंने देश का मार्ग-दर्शन किया और मैं समझता हूं कि उन्होंने सारे देश के नागरिकों के लिये मार्ग-दर्शन दिया है कि वे देश की रक्षा के लिये जागरूक हों। मैं इन्हीं शब्दों के साथ अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और साथ ही साथ जो पत्रकार उनके हवाई जहाज में था, वह यह सोच कर भी अपना कर्तव्य पूरा करे और वहां कुछ सूचना प्राप्त करे, इस प्रकार से मिट कर जो पत्रकारिता के लिये देश को

Page No 5

(श्री मुरलीधर व्यास):
बचाने का रास्ता प्रस्तुत किया, मैं उन सभी को अपनी तरफ से श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और अपने दल की तरफ से जो कुछ भी घटना हुई है उसके लिये श्रद्धांजलि व उनके परिवार के प्रति संवेदना प्रकट करता हूं और माननीय मुख्य मंत्रीजी ने जो प्रस्ताव रखा है उसका समर्थन करता हूं ।

श्री रामानन्द अग्रवाल (अलवर) : अध्यक्ष महोदय, श्री बलवन्तरायजी मेहता के निधन के समाचार आज सुबह पत्रों में पढ़ने को मिले; पढ़ते ही एकदम से एक बड़ी बेचैनी तबियत को हुई क्योंकि आज जिस स्थिति में से हमारे वे प्रान्त जो कि पाकिस्तान की सीमा के साथ लगते हैं, उन राज्यों में वहां की राज्य सरकारों की अपने देश की सीमाओं की रक्षा करने में विशेष जिम्मेदारी है और इस नाते गुजरात राज्य में वहां की सरकार का नेतृत्व करते हुए आज भारत के संकट के समय में श्री बलवन्तराय मेहता जिस योग्यता के साथ अपनी तमाम जनता को संगठित करके दुश्मन का मुकाबला करने के लिये उनको इकट्ठा कर रहे थे, आज उनके निधन ने निश्चित तौर से हमारे इन प्रयासों पर आघात पहुंचाया है । श्री बलवन्तराय मेहता की जिंदगी एक सारी संघर्षों की जिंदगी रही है । उन्होंने अपने जीवन-काल में देशी राज्यों में पुराने सामन्ती शासन के विरुद्ध संघर्ष करके सारे हिन्दुस्तान की जनता में एक अपने प्रभाव का, अपनी कार्य-क्षमता का, संगठन का परिचय दिया और अब भी जिस तरह से उन्होंने गुजरात राज्य में शासन को चलाया, जिस प्रकार पंचायती राज के बारे में अपनी रिपोर्ट पेश कर अपनी दूरदर्शिता, अपनी बुद्धिमत्ता और शासन चलाने की शक्ति का जो उन्होंने परिचय दिया है वह हम सब लोगों के लिये बहुत महत्वपूर्ण है ।

श्री बलवन्तरायजी मेहता के साथ उनकी धर्मपत्नी, निजी सचिव, चालक भी थे; जो भी इस मृत्यु में उनके सहयोगी बने हैं । पाकिस्तान जिस तरीके के आज घिनौने तरीके अपना रहा है, हमारी सामान्य जनता पर बमबारी करके, असैनिक लोगों पर बम बरसा कर लोगों में आतंक पैदा करने की कोशिश कर रहा है, हमारी बहादुर जनता ने उसका जवाब दिया है । श्री बलवन्तरायजी मेहता ने पाकिस्तान की इन घिनौनी हरकतों के शिकार बन कर, मैं समझता हूं, आज देश के इस समय में इस प्रकार से उनका निधन हुआ है, एक वीरगति प्राप्त की है और आखिर वक्त में भी देश के ऐसे संकट के समय में काम आये हैं कि उनका नाम निश्चित तौर से देश के अग्रगण्य शहीदों में लिखा जायगा, जिसके लिये कि वे जन्मे । हमारे देश की जनता का साहस इससे घटेगा नहीं, अपितु बढ़ेगा और पाकिस्तान की क्रूर हरकतों के बावजूद हमारी जनता साहस व धैर्य के साथ उसका मुकाबला करेगी ।

इन शब्दों के साथ मैं दिवंगत आत्माओं के प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं ।

श्री अध्यक्ष: श्री बलवन्तरायजी मेहता के आकस्मिक निधन पर जो शोक प्रस्ताव और श्रद्धांजलि स्वरूप प्रस्ताव हमारे सदन में सदन के नेता ने रखा है, उस पर माननीय विरोधी पक्ष के नेता ने, अन्य दलों के नेताओं ने विचार व्यक्त किये, जो भावना यहां प्रकट की गई है, उनमें

Page No 6

(श्री अध्यक्ष)

में अपने आपको सम्मिलित करता हूं और श्री बलवन्तरायजी मेहता और उनके साथ जिन व्यक्तियों का वर्णन दिया, हमारे देश के बोर्डर पर कार्य करते हुए निधन हुआ, उनके प्रति हम सब श्रद्धान्जलि अर्पित करते हैं।

श्री बलवन्तराय मेहता का नाम कई कारणों से हमारे इतिहास में लिखा जायगा। प्रारम्भ में जब देशी राज्यों में स्वतन्त्रता आन्दोलन हुए तो उनमें उनका बहुत प्रमुख स्थान था और जब स्वतन्त्रता मिली तो लोक सभा के सदस्य के नाते उन्होंने अपने आपको एक बहुत ही अच्छा विधायक साबित किया। वे प्राक्कलन समिति के सभापति रहे और अपने कार्यकाल में समिति का कार्य बहुत अच्छे ढंग से चलाया; बहुत अच्छी, उच्च कोटि की रिपोर्टें उनके समय में समिति द्वारा प्रस्तुत की गईं। परन्तु सबसे बड़ी बात जो हमारे दिमाग में रहेगी वह शायद यह है कि श्री बलवन्तराय मेहता ने पंचायती राज के सम्बन्ध में रिपोर्ट लिखी उससे हमारे सारे देश में पंचायती राज की नींव लगी और जहां कहीं पंचायती राज के संबंध में चर्चा आयेगी तो उनका नाम बहुत ही आदर और दूरदर्शी नेता के रूप में आयेगा।

मैं इस समय आपसे निवेदन करूंगा कि आप दो मिनट मौन खड़े होकर यह प्रस्ताव पारित करें। जो भावना यहां व्यक्त की गई, जो माननीय सदस्यों ने व्यक्त की हैं, वे उनके परिवार के समक्ष पहुंचा दी जायं।

(सदन के समस्त माननीय सदस्यों ने दो मिनट तक मौन खड़े रह कर दिवंगत आत्माओं के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित की)

अब सदन की कार्यवाही कल प्रातः १० बजे तक के लिये स्थगित की जाती है।

(तदनन्तर सदन की कार्यवाही म. प. ३.५८ बजे दिनांक २१ सितम्बर, १९६५ के म. पू. १० बजे तक के लिये स्थगित हुई)

———

शुद्धि-पत्र

(कार्य-विवरण, दिनांक २० सितम्बर, १९६५)

स्कम्भ संख्या	पंक्ति संख्या	अशुद्धि	शुद्धि
१	अन्तिम	दस्य	सदस्य
३	अन्तिम से ६	हाने का	होने का
४	११	उन्होंन देशी	उन्होंने देशी
,,	१३	वे महत्मा	वे महात्मा
५	१५	कठन है।	कठिन है
६	३	करता है।	करता है।"
७	३	इस प्रकर	इस प्रकार
,,	अन्तिम से ५	हि्ुस्तान के	हिन्दुस्तान के
८	१४	क वातावरण	के वातावरण
१०	अन्तिम से ९	क साथ	के साथ